सुशीला टाकभौरे के कथा साहित्य में पात्रों की सामाजिक उपादेयता

देवी सिंह

शोधार्थी

हिन्दी विभाग, जीवाजी विष्वविद्यालय ग्वालियर (म.प्र.)

शोध सार

साहित्य और समाज वास्तव में अन्योन्याश्रित हैं। अतः सामाजिक व्यवस्था में बदलाव लाने का बहुत बड़ा दायित्व साहित्य पर भी है। डॉ. शिवकुमार मिश्र के अनुसार, 'साहित्य और कलाओं में सामाजिक जीवन न तो यथावत् प्रतिबिंबित होता है। रचनाकार उसे सीधे-सपाट रूप में ग्रहण ही करता है। रचनाकार यदि एक स्तर पर समाज से प्रभावित होता है। तो दूसरे स्तर पर उसे प्रभावित भी करता है, उसे एक नया रूप भी देता है।' अर्थात बदलते कालचक्र के साथ तथा बदली हुई परिस्थितियों के अनुसार जीवन, समाज और साहित्य एक दूसरे से प्रभावित हुए बिना नहीं रह सकते। मानव जीवन के रुचि परिवर्तन के साथ-साथ युग धारा भी नई करवट लेती है। साहित्य की गति अबाध रहती है। वह तो अविरल बहता है और साथ चलती है लेखनी, कलाकार की दृष्टि तथा संवेदनशीलता, उसे अपने परिवेश के प्रति जागरुक एवं सजग बनाती है। रचनाकार की अपनी संवेदनशीलता, सृजन क्षमता, कल्पना शक्ति के अनुसार उसे प्रभावी बनाने का प्रयास करती है।

मुख्य बिन्दु-

विसंगति, रचनाकार, प्रतिबिंबित, दायित्व, अन्योन्याश्रित, परिस्थितियों, संवेदनशीलता, परिवेश।

भारतीय समाज में सदियों से चिंतन, परिवर्तन और सुधार का दायित्व अधिकांशतः पुरुषों पर ही रहा है। पर अब स्थिति बदल चुकी है, हमारा इतिहास इस बात का साक्षी है, जिसमें नारियों की कर्मठता, जागरूकता एवं वीरता को गौरव गाथाएँ अंकित हैं। नारी चेतना का जो आंदोलन उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध से आरंभ हुआ उसका अब विकसित रूप दृष्टिगोचर हो रहा है।

''सुशीला टाकभौरे ने अपनी कहानियों में समसमायिक परिवेश को दर्शाया है, जिसमें जीवन की कई विसंगतियाँ, सामाजिक और पारिवारिक यथार्थ के साथ-साथ विभिन्न प्रकार की चेतना भी है। सुशीला टाकभौरे के नारी पात्र अकेलापन, अजनबीपन, कुंठा एवं संत्रास से जूझ रहे हैं, जिनके समक्ष आर्थिक, सामाजिक और पारिवारिक चुनौतियां हैं, जीवन का यथार्थ और सत्यता हैं।''1

एक सामाजिक प्राणी होने के नाते लेखक के क्रिया-कलाप, जीवन विकास सभी कुछ समाज में रहकर तथा सामाजिक व्यवस्था से प्रभावित होते हैं। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भारतीय समाज ने जातीय वर्गों के साथ ही आर्थिक वर्गों का भी निर्माण हुआ, पारिवारिक ढांचे में परिवर्तन आया है। स्त्री को संविधान से सामाजिक अधिकार मिलने के फलस्वरुप वह पुरुष के साथ सामाजिक कार्यों में भाग लेने और नौकरी करने के कारण अपने परिवार में आर्थिक सहयोग देने लगी अब उसकी स्थिति घर और बाहर परंपरागत ढंग की नहीं रहीं है।

''डॉ. लक्ष्मीकांत वर्मा ने आधुनिकता को तात्विक नियमन नहीं बल्कि मानसिक दृष्टि स्वीकारा है। इसी दृष्टिकोण की पक्षधरता करते हुए डॉ. शंभूनाथ सिंह ने लिखा है, आधुनिकता का बोध एक सामाजिक जीवन बोध है, जो समाज के ऐतिहासिक विकास क्रम के विभिन्न आयामों से जुड़ा होता है। प्राचीन काल के मूल्यों में परिवर्तन के परिणामस्वरूप आधुनिक बोध की दृष्टि से नारी और पुरुष की आर्थिक समता या नारी की आत्मनिर्भरता ने वैवाहिक समस्या की अनिवार्यता को प्रश्न चिन्हों के कटघरे में खड़ा कर दिया है। जहाँ पारस्परिक विष्वास न हो, सुख-दुःख भावी दृष्टिकोण न हो, समर्पण और त्याग न स्वीकारा जाता हो, वहाँ विवाह अर्थहीन रस्म ही होगा।''2

सुशीला टाकभौरे ने बदलते परिवेश में निम्न, पिछड़े गरीब, निर्धन, दलित, परिवार की नारी पात्रों की दुर्दशा को व्यक्त किया है। कहानियों के नारी पात्र गरीबी और आर्थिक विषमता, अस्पृश्यता, स्पर्धा, छुआछूत को व्यक्त किया है। कथा साहित्यकार ने बहुत सी मनोवैज्ञानिक व्यवस्थाओं को प्रतिबिंबित कर समाज के यथार्थ से परिचय कराया है। सुशीला टाकभौरे ने सामाजिक विसंगतियों को विभिन्न कहानियों के द्वारा समाज में दलित चेतना का विकास किया। जिससे ऐतिहासिकता एवं मनोवैज्ञानिकता का सही संश्लेषण और विश्लेषण हो सके।

सुशीला टाकभौरे ने मेरा बचपन नामक कहानी में समाज के अजनबी पन को दर्शाया है। जीवन का यथार्थ और सत्यता है। लेखिका ने ग्रामीण समस्याओं को दर्शाया है। जीवन की विसंगतियाँ जो बच्चा पैदा होने पर परिवारों में दिखलाई पड़ती हैं। गरीब एवं अछूतों के बच्चों का पालन-पोषण, सवर्ण एवं परिवारों से अलग होता है। उनकी जीवनशैली, प्यार, खानपान, तौर-तरीका, संस्कार, सभ्यता आम परिवारों से भिन्न होती है। उसका कारण घर, परिवार, सुविधाएं एवं समस्याओं पर निर्भर करता है। अधिकांशतः परिवारों में आर्थिक विषमता के कारण प्रेम और अपनापन को दर्शाया है।

''किसी गरीब अछूत के बच्चे का पालन पोषण जैसा होता है, उसी तरह मेरा पालन हुआ। मैं सुख वैभव के पालने में नहीं झूली। अधिकतर नानी ही हमें संभालती थी। अभाव थे मगर प्रेम और

अपनापन भी था। पहली बार घुटना चलने पर, पहली बार पांव चलने पर, पहली बार बोलने पर मेरे लिए भी घर परिवार में खुशी हुई थी। दो साल के बाद छोटा भाई मोहन आ गया था तब से मैं नानी के पास ही अधिक रहीं। मोहन के बाद कैलाश हुआ लेकिन वह अधिक दिन जीवित नहीं रहा। उसके बाद कमल हुआ। जब हम भूख से रोते, माँ नानी हमें काली चाय के साथ रोटी खिला देती थीं। कभी प्यार से, कभी गुस्से से थपककर सुला देती थीं। इसी तरह खाते, खेलते, रोते हम बड़े होते रहे।''3

सुशीला टाकभौरे ने मेरा बचपन नामक कहानी में बचपन की स्मृतियों और संस्मरण को दर्शाया है। अधिकतर प्रेम और अपनेपन का अभाव था। अछूतों के बच्चे भूख से रोते थे। अपौष्टिक भोजन खाने को मिलता है। परिवार में पैसेगत व्यवसाय से जो जीविकोपाया आता था उसी से पूरे परिवार की भूख की अग्नि शांत होती थी। लेखिका ने अपने भोगे हुए यथार्थ से अवगत कराया है। वर्तमान समय में ऐसे बहुत से परिवार है। जो भूख के द्वारा तड़पते हैं और उनकी सभी आवश्यकताओं की पूर्ति नहीं होती है। जिससे जीवन की गतिविधियाँ अथाह शक्ति अथा साध्य प्रभावित होता है। कथाकार ने बचपन में बुरी मानसिकता और सामाजिक बुरे व्यवहार को देखा है।

''सुशीला टाकभौरे की टूटता वहम नामक कहानी में सिलिया का चरित्र भिन्न जीवन की विसंगतियों से संबंधित है। सिलिया जीवन पर्यंत कष्ट और यथार्थ को भोगती रही। सिलिया का जीवन गरीबी भुखमरी कई प्रकार की कुंठाओं से ग्रस्त था। सिलिया के जीवन में लाचारी दरिद्रता सभी प्रकार के कष्ट जीवन में व्याप्त थे। सिलिया के साथ आत्मविष्वास एवं आत्मबल था जिसके द्वारा वह जी रही थी।''4

सिलिया अपने पैरों के पास की जमीन देखने लगी। सच बात थी, गाडरी मोहल्ले के जिस कुएँ से मालती ने पानी निकालकर पीया था, वहाँ से 20-25 कदम पर ही मामा-मामी का घर था। जिसकी रस्सी बाल्टी और कुएँ को छूकर मालती ने अपवित्र कर दिया था, वह औरत बकरियों के रेबड़ पालती थी। गाडरी मोहल्ले के अधिकांश घरों में भेड़ों एवं बकरियों के पालने बेचने का व्यवसाय किया जाता था। गाडरी मोहल्ले से लगकर ही आठ-दस घर भंगी जाति के थे। सिलिया के मामा-मामी यहीं रहते थे। मालती सीलिया की हम उम्र थी मगर हौसलों में निडरता बहुत ज्यादा थी। जिस काम को नहीं करने की नसीहत उसे दी जाए, उसी काम को करके वह खतरे का सामना करना चाहती थी। सिलिया गंभीर और सीधे-सरल स्वभाव की आज्ञाकारी लड़की थी।

इसी क्रम में त्रिशूल नामक कहानी में पार्वती नामक नारी पात्र की कहानीकार ने अजनबीपन को दर्शाया है। ''दिनभर अनेक विचार मस्तिष्क में घूमते रहे। कहीं कोई और छोर नहीं मिला। शिव

और पार्वती दोनों ही नाम ऐतिहासिक, पौराणिक और परिभाषिक हैं जो प्रेम, तपस्या और दृढ़निश्चय के प्रतीक के रूप में माने जाते हैं। पार्वती अपने शिव से दूर क्यों रहना चाहती है। रेणू बार-बार इस बात पर विचार करती रही। सुबह उसने मोहिनी के पापा को पूरा स्वप्न बताया, साथ ही इसका कारण जानने की इच्छा भी जाहिर की। किंतु उनमें कोई समाधान नहीं मिल सका। दस बजे खाना खाकर मोहिनी के पापा ऑफिस चले गये। रेणु का मन अपनी आंतरिक अंधेरी गुफाओं में भटकता रहा। चेतन, अर्ध चेतन में पड़ी स्मृतियों पर विचार करता रहा। नाश्ता बनाना, बच्चों को स्कूल भेजना, खाना बनाना, घर ठीक करना सभी काम करती हुई रेणू खोई खोई, अशांत सी रही।''5

कहानीकार ने अनुभूति के घेरे में पार्वती नामक नारी पात्र के अजनबीपन को दर्शाया है। उन्होंने जीवन को तपस्या और दृढ़ निश्चितात्मक रूप में माना है। इसके अलावा प्रत्येक व्यक्ति के मन और मस्तिष्क में अतिरिक्त विचार अंधेरे गुफाओं में मन और मस्तिष्क में भटकता रहता है। मैथिलीशरण गुप्त ने भारत-भारतीय में कहा है। मानव मौन नहीं रहता। आप-आप से कहता और आप-आप को सुनता है, कहानीकार ने अवगत कराया किसी जाति का कोई व्यक्ति है। उसके मन में बहुत सी घटनाओं एवं प्रसंगों में भटकता रहता है जो उसकी जीवन की मौलिकता है। अर्ध चेतन एवं चेतन, अचेतन ये जीवन की स्मृतियाँ हैं। परोक्ष एवं अपरोक्ष रूप से जीवन को प्रभावित करती हैं।

सन्दर्भ सूची

1- *टाकभौरे सुशीला, वह लड़की, वाणी प्रकाशन-दिल्ली, संस्करण-2020, पृष्ठ-13*

2- *टाकभौरे सुशीला, वह लड़की, वाणी प्रकाशन -दिल्ली, संस्करण-2020, पृष्ठ-23, 24*

3- *टाकभौरे सुशीला, वह लड़की, वाणी प्रकाशन -दिल्ली, संस्करण-2020, पृष्ठ-24*

4- *टाकभौरे सुशीला, वह लड़की, वाणी प्रकाशन -दिल्ली, संस्करण-2020, पृष्ठ-34*

5- *टाकभौरे सुशीला, वह लड़की, वाणी प्रकाशन -दिल्ली, संस्करण-2020, पृष्ठ-73*

Contributors Details:

देवी सिंह

शोधार्थी

हिन्दी विभाग, जीवाजी विष्वविद्यालय ग्वालियर (म.प्र.)